05

सीखना-सिखाने पर मॉण्टेसरी पद्धति का प्रभाव

उमा शंकर

मॉण्टेसरी पद्धति एक सौ पाँच साल पुरानी पद्धति है सो इसके सन्दर्भ में पढ़ने–पढ़ाने के तरीकों को 'अभिनव' कहना अपने आप में एक विरोधाभास लगता है!

लेकिन यह सच है कि अन्यान्य कारणों से इसके सिद्धान्त व इसके तौर–तरीके अभी इतने व्यापक नहीं हुए कि कक्षा में पढ़ने–पढ़ाने की यह एक स्वीकृत पद्धति बन पाई हो। इसके बावजूद कक्षा में अगर इसे सही ढंग से लागू किया जाए तो आज भी यह पद्धति सिखाने के रचनात्मक तरीके और सीखने–समझने के उत्तम परिणाम दे सकती है।

दरअसल, मॉण्टेसरी ने शिक्षा को जीवन–सहयोग के बतौर परिभाषित किया था। अब यदि यही हमारा ध्येय है और हमारा सपना भी यही है कि हम ऐसी श्रेष्ठ संस्थाएँ बनाएँ जहाँ हमारे बच्चे अपनी विशिष्ट जरूरतों के अनुकूल वातावरण व अनुभव पाएँ और उनके स्वाभाविक विकास के उस चरण के अनुरूप तरीके उन्हें मुहैया हों, तो फिर तो मॉण्टेसरी के सिद्धान्त हमें आदर्श समाधान देंगे क्योंकि बरसों तक बच्चे का अवलोकन करने के बाद जाकर उनके तरीके की नींव डली थी।

3–6 साल तक के बच्चों के लिए कक्षा का स्वरूप, 6–12 साल के आयु–वर्ग वाले बच्चों से अलग होता है, क्योंकि उनकी व्यक्तिगत जरूरतें व स्वभाव एक–दूसरे से उतने ही अलग होते हैं जितने कि वे एक तितली के जीवन–चक्र के अलग–अलग चरणों में होते हैं। एक तरफ जहाँ हम यह मानते हैं कि एक नवजात शिशु की पोषण सम्बन्धी आवश्यकताएँ, चलना सीख रहे उस डेढ़ साल के एक बच्चे से जुदा होती हैं, जिसकी पोषण सम्बन्धी आवश्यकताएँ स्कूल जाने वाले एक बच्चे के मुकाबले अलग होती हैं, वहीं दूसरी ओर हमारे अधिकांश स्कूलों का ढाँचा इस सोच के तहत बनाया गया लगता है मानो 3 या 4 साल से लेकर 16 साल तक के सारे बच्चों के लिए एक ही प्रकार की कक्षा–व्यवस्था और पढ़ाने के एक ही प्रकार के तरीके से काम चल जाएगा।

लेकिन समय–समय पर, निजी और सार्वजनिक, दोनों ही क्षेत्रों के कई स्कूलों ने बच्चों को पढ़ाने–लिखाने के वैकल्पिक तरीके बनाए हैं।

कक्षा

कक्षा का स्वरूप, शिक्षक द्वारा ढाई से छह साल तक के बच्चों की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। कक्षा में इतनी जगह होती है कि बच्चे बड़े आराम से फर्श पर अपनी बैठक जमा सकें। इसके बाद तो हर बच्चे का बिछौना उसका अपना संसार होता है, अपना इलाका होता है। कुछ बच्चे चौकियों पर काम करना भी पसन्द कर सकते हैं। बच्चों का सारा सामान दीवार के सहारे रखी हुई तीन खानों वाली कम ऊँची अलमारियों में रखा रहता है। नतीजतन, कोई भी बच्चा अपने हिसाब से इन आलों में रखी हुई सामग्री देख सकता है, चुन सकता है और उससे खेल सकता है। इसके अलावा, दीवार पर कम ऊँचाई पर ही कुछ चित्र भी टँगे होते हैं जिन्हें बच्चे जब चाहें तब और जितनी देर चाहें उतनी देर तक देख सकते हैं। ये चित्र, चिर–परिचित कार्टून न होकर हाथ से बने चित्र होते हैं जिनमें बच्चों की रुचि के विषयों से जुड़ी जानकारियाँ दी जाती हैं। वह शिक्षक द्वारा सुन्दर हस्तलिपि में लिखी गई अँग्रेजी व क्षेत्रीय भाषा की वर्णमाला भी हो सकती है। क्लासरूम बड़ा न होने की सूरत में बच्चे अपनी चटाइयाँ और सामग्री लेकर अपनी कक्षा से लगे बरामदे में बैठ अपनी गतिविधियाँ करते हैं।

अध्ययन सामग्री

मॉण्टेसरी व्यवस्था में चार तरह की इन प्रमुख गतिविधियों से जुड़ी विविध सामग्री काम आती है – व्यावहारिक जीवन से जुड़ी गतिविधियाँ, अनुभूतिजन्य गतिविधियाँ, भाषा व अंकगणित सम्बन्धी गतिविधियाँ।

कई वर्षों तक बच्चों का अवलोकन करने और सीखने की संवेदी व निर्णायक उम्र पर गौर करने के बाद ही इन चीजों व गतिविधियों को इस व्यवस्था में शामिल किया गया है। व्यवस्था में शामिल होने के लिए इन चीजों व गतिविधियों का बच्चों के हिसाब से सार्थक होना भी जरूरी है और हम उन्हें सिर्फ इसी आधार पर शामिल नहीं करते कि वे दिखने में आकर्षक हैं। हमारा सारा ध्यान इस बात पर भी रहता है कि बच्चे को उसकी आयु के अनुरूप गतिविधियाँ और आवश्यक सामग्री दी जाए ताकि वह उसमें तल्लीनता से शामिल हो।

व्यावहारिक जीवन की गतिविधियों से जुड़ी सामग्री, बच्चे के जीवन में शामिल वयस्कों के दैनिक क्रियाकलापों के हिसाब से तय की जाती है और इसके चलते किसी नए वातावरण के अनुसार ढलने में बच्चे को मदद मिलती है। इन तमाम गतिविधियों के दौरान बच्चा चीजें पकड़ता है, उन्हें थामता और उठाता है, अनाज सरीखे छोटे–छोटे दानों–कणों और तरल पदार्थों को उँडेलता–पलटता है, झाड़न और

मारिया मॉण्टेसरी

तौलिया इत्यादि तह करना सीखता है, अलमारियों व आलों को झाड़ता–पोंछता है, फर्श साफ करता है, सब्जियाँ काटने और रोटियाँ बेलने जैसे रसोई के कामकाज करता है। गतिविधियों का चयन आसपास के इलाके के हिसाब से किया जाता है और इनका सारा दारोमदार शिक्षक की सृजनात्मकता पर होता है। मॉण्टेसरी की **अंकगणितीय सामग्री** और उनके **अनुभूतिजन्य संवेदी उपकरण** सब जगह आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। लेकिन भाषाई सामग्री के साथ कोई कक्षा कितनी कल्पनाशील है, यह बात पूरी तरह से अध्यापक पर निर्भर करती है जो बच्चों की शब्द–सम्पदा बढ़ाने के लिहाज से विभिन्न विषयों पर कूटबद्ध चित्र बनाकर पेश करता है। आगे चलकर, बच्चा 'सैण्डपेपर लेटर्स (रेगमाल अक्षर)' और 'मूविंग ऐल्फाबेट (गतिशील वर्णमाला)' जैसी सामग्री (एक बक्सा जिसमें वर्णमाला के अक्षरों के कटआउट रखे होते हैं जिनको बच्चा किसी शब्द में आने वाले अक्षरों की ध्वनि सुन–सुनकर उसी क्रम में जमाता जाता है) और इस प्रकार बिना कुछ लिखे ही वह अपने आपको लिखने के अभ्यास के लिए तैयार करता है। पढ़ना सीखने की उम्र में पहुँचने पर बच्चे नाम की स्लिप लगे पिक्चर कार्ड भी बनाते हैं। विभिन्न विषयों पर छोटी–छोटी पुस्तिकाएँ बनाई जाती हैं, जिनके हर पन्ने पर एक शब्द या वाक्यांश लिखा रहता है और उसके ठीक सामने वाले पन्ने पर उस शब्द या वाक्यांश के सदृश्य एक चित्र बना होता है ताकि बच्चे को अपने द्वारा की जाने वाली पढ़ने की क्रिया में आत्मविश्वास आए।

कक्षा में अपनाए जाने वाले तरीके

सामग्री की एक औपचारिक 'प्रस्तुति' के द्वारा अध्यापक, बच्चों को सामग्री पर काम करने का तरीका सिखाते हैं। व्यक्तिगत और सामूहिक प्रस्तुतिकरण के अवसर भी मिलते हैं। विकास के इस चरण पर यह देखा गया है कि बच्चे अपने आप ही काम करना पसन्द करते हैं, यहाँ तक कि जब दो मित्र एक–दूसरे के करीब बैठकर भी काम करना चुनते हैं, तब भी उनका तरीका एक–दूसरे के साथ काम करने का न होकर, अपना–अपना काम खुद से करने का ही होता है, लेकिन सौहार्दपूर्ण ढंग से।

मॉण्टेसरी माहौल में ढाई साल की उम्र वाले और उससे बड़े बच्चों को काम करने, चलने–फिरने, बातचीत करने वगैरह की पूरी आजादी मिलती है। लेकिन इन आजादियों की कुछेक सीमाएँ भी होती हैं। मान लीजिए एक बच्चा सामग्री विशेष के साथ काम करना चाहता है। पहले तो उसके अध्यापक द्वारा उसे उस सामग्री का औपचारिक परिचय कराया जाएगा और इसके बाद वह सामग्री अलमारी में उपलब्ध भी होनी चाहिए। अगर कोई और बच्चा उस सामग्री के साथ कुछ काम रहा है तो इस बच्चे को या तो अपनी बारी आने तक इन्तजार करना पड़ेगा या फिर उसे अपनी पसन्द की कोई और चीज पसन्द करनी पड़ेगी। बच्चों में सामाजिक जिम्मेदारी का जज्बा पैदा करने का यह एक सहज तरीका लगता है और मॉण्टेसरी इसे 'सामाजिक इकाई का परस्पर–सहयोग' का नाम देती हैं। बच्चे की इच्छाशक्ति विकसित करने के एक उतने ही महत्वपूर्ण तरीके के बतौर भी इसे देखा जा सकता है।

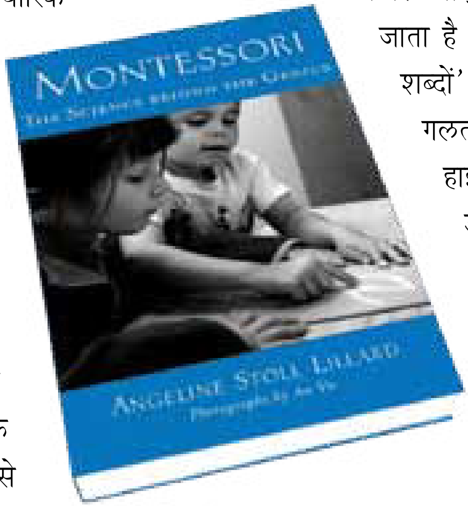

मॉण्टेसरी माहौल, बार–बार उलट–पलट कर देखने, जुगाड़ भिड़ाने और काम करने के अवसर देता है जिसके चलते बच्चा काम में निपुणता हासिल तो करता ही है, साथ ही गणित व भाषा की बुनियादी अवधारणाओं की एक गहरी समझ भी पाता है। नतीजतन, आगे की पढ़ाई के साथ–साथ वृहत्तर जीवन के लिए भी वह तैयार होता है।

शिक्षा के परिणाम

शिक्षा में गुणवत्ता के सवाल को देखने का एक तरीका यह भी है कि जब हमारे बच्चे प्री–प्राइमरी से प्राइमरी, प्राइमरी से एलिमेण्टरी की ओर बढ़ें और इस तरह बढ़ते–बढ़ते जब वे अपनी पढ़ाई पूरी कर स्कूल छोड़ रहें हों तब अपने शाला–प्रस्थान प्रमाणपत्र के साथ हम उन्हें किस तरह के ज्ञान से लैस देखना चाहते हैं या उन्हें किस तरह के व्यक्ति के बतौर देखना चाहते हैं।

विप्रो ई.आई. द्वारा किए गए एक अध्ययन पर द हिन्दू नामक अखबार में (12 दिसम्बर, 2011) छपे एक लेख का शीर्षक है 'उत्तम स्कूलों में रट्टे का प्रचलन'। बहुत से अभिभावकों का कहना था कि प्राइवेट स्कूलों की प्राइमरी कक्षाओं में जाने वाले उनके बच्चों को अपने उत्तर केवल पाठ्यपुस्तकों में से लिखने को कहा जाता है और अगर वे अपने जवाब 'अपने शब्दों' में लिखते हैं तो उनके जवाबों को गलत बताया जाता है। ऐसे में, जब वे हाईस्कूल में हों, हम अपने बच्चों से, उनके शिक्षकों द्वारा लगाई गईं इन शुरुआती अपेक्षाओं की जकड़ से मुक्त हो एकाएक 'कठघरे से बाहर' सोच पाने की उम्मीद भला कैसे कर सकते हैं?

मॉण्टेसरी का कहना है, "विकास गतिविधि के चलते होता है, न कि बौद्धिक समझ से। इसीलिए, छोटे बच्चों, खासकर तीन से छह साल की उम्र तक के बच्चों की शिक्षा महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि चरित्र व समाज निर्माण की यही प्रारम्भिक अवस्था होती है ..." (दि ऍब्सॉर्बण्ट माइण्ड, मारिया मॉण्टेसरी – अवशोषी मस्तिष्क, मारिया मॉण्टेसरी)।

यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया की मनोविज्ञानी एंजलीन लिलार्ड (*मॉण्टेसरी : दि साइंस बिहाइण्ड द जीनियस की लेखक*) और सम्प्रति विलानोवा यूनिवर्सिटी की मनोविज्ञानी निकोल–एल्से–क्वेस्ट ने उन बच्चों का अध्ययन किया जिन्होंने मिलवॉकी के एक पब्लिक मॉण्टेसरी स्कूल में जाने के लिए एक लॉटरी में भाग लिया था। इस अध्ययन की एक रिपोर्ट साइंस नामक पत्रिका के 28 सितम्बर, 2006 के अंक में छपी। इसका कहना है–

"एक पब्लिक इण्टरसिटी मॉण्टेसरी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के परिणामों की तुलना पारम्परिक स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के नतीजों से करने वाले एक अध्ययन के मुताबिक पारम्परिक स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की तुलना

में .... मॉण्टेसरी शिक्षा से बेहतर सामाजिक व शैक्षिक योग्यताओं वाले बच्चे तैयार होते हैं .... “मॉण्टेसरी पद्धति की विशिष्टताएँ हैं : बहु–आयु कक्षाएँ (मल्टी–एज क्लासरूम्स), खास तरह की शैक्षणिक सामग्री, लम्बे कालखण्ड में विद्यार्थी द्वारा चयनित कार्य, मार्गदर्शकों के चलते एक सहयोगपूर्ण वातावरण, परीक्षाओं व ग्रेड्स का न होना तथा शैक्षिक व सामाजिक दक्षताओं हेतु व्यक्तिगत व सामूहिक निर्देश। यू.एस. में 300 पब्लिक स्कूलों समेत 5000 से भी ज्यादा स्कूल मॉण्टेसरी पद्धति का प्रयोग करते हैं।”

“प्रारम्भिक स्कूल के हिसाब से पढ़ने और गणित सम्बन्धी निपुणताओं के मामले में पाँच साल की उम्र वाले बच्चों में गैर–मॉण्टेसरी विद्यार्थियों की तुलना में मॉण्टेसरी विद्यार्थी कहीं बहुत बेहतर पाए गए हैं। प्रबन्धकीय प्रकृति के कार्यों में भी मॉण्टेसरी बच्चे बेहतर पाए गए यानी ज्यादा जटिल और परिवर्तनशील समस्याओं के साथ तालमेल बैठा पाने की योग्यता उनमें अधिक पाई गई, जो कि स्कूल व जीवन, दोनों क्षेत्रों में उनकी भावी सफलता का सूचक है।”

लेखिकाओं का निष्कर्ष था, “... ठीक–ठीक अमल में लाने पर मॉण्टेसरी शिक्षा ऐसी सामाजिक व शैक्षणिक क्षमताएँ विकसित करती है जो दूसरी तरह के स्कूल–समूह द्वारा विकसित की जाने वाली क्षमताओं के मुकाबले या तो बेहतर होती हैं या कम से कम उनके बराबर होती हैं।”

ऐसे वातावरण में बच्चे कितनी आसानी से अपनी सामाजिक निपुणताएँ विकसित कर पाते हैं, इस बात का मर्म समझने के लिए मैं यहाँ श्री रामचरण ट्रस्ट की अध्यक्ष श्रीमती पद्मिनी गोपालन को उद्धृत करती हूँ : “हमारे ट्रस्ट के एक मित्र, कॉर्पोरेशन ऑफ चेन्नै के चेन्नै स्कूल्स, माइलापुर में जहाँ हमने एक मॉण्टेसरी कक्षा स्थापित की थी, अपना एक पारिवारिक कार्यक्रम करना चाहती थीं। एक दोपहर को वे बच्चों के लिए कुछ मीठा व कुछ नमकीन ले आईं। बच्चों को कक्षा में चारों ओर एक कतार बनाकर बैठने को कहा गया और आगंतुक लोग उन्हें नाश्ता परोसने लग गए। मैं इस बात पर हैरान रह गई कि 3 से 5 साल की उम्र के बच्चे बड़े संयम से अपनी बारी आने का इन्तजार कर रहे थे। कोई हल्लागुल्ला न हुआ, कोई चीख–पुकार न हुई, कोई रोना–धोना न था और ऐसा भी न था कि उन बच्चों के मन में टीचरों या आगंतुकों को लेकर कोई डर था। बल्कि उनमें से एक ने तो परोसे जाने वाले स्वल्पाहार को लेकर अपनी विशेषज्ञ टिप्पणी तक कर डाली, ‘यह वड़ा बहुत अच्छा है, जरूर यह किसी अय्यर परिवार से आया है, क्योंकि इसमें कोई प्याज जो नहीं हैं!’ यह क्या इसलिए है कि उन्होंने अपनी बारी आने तक इन्तजार करना सीख लिया है, और अब उन्हें यह भरोसा हो चला है कि उन्हें भी उनका हिस्सा मिलेगा?”

अपना पहला मॉण्टेसरी वातावरण छोड़कर आगे की कक्षाओं जाने वाले एक छह वर्षीय बच्चे में जिन गुणों की झलक मिलती है वे हैं : आत्मविश्वास, स्वाभिमान, जिम्मेदारी का बोध, अपने विचारों को सफाई व्यक्त कर पाने की योग्यता, स्वप्रेरित ज्ञानार्जन, अपने द्वारा उठाए गए काम को पूरा करने के प्रति समर्पण और सबसे बढ़कर अभी चल रहे काम पर एकाग्र बने रहने की क्षमता। इनमें से प्रत्येक गुण को हम शिक्षा के एक परिणाम के बतौर कक्षा से प्राप्त अपने अनुभवों के साथ जोड़कर देख सकते हैं।

अपने समूचे स्कूली जीवन से मिलने वाले ज्ञान हेतु बच्चे के लिए जो चीज सबसे ज्यादा अनिवार्य होती है वह है एकाग्र रह पाने की उसकी क्षमता। अध्यापकों व अभिभावकों से हर बच्चे को कम से कम यह एक डाँट तो पड़ती ही रहती है, “अगर तुम सिर्फ ध्यान ही देते तो इससे कहीं बहुत अच्छा कर पाते!” लेकिन सहजता से एकाग्र रह पाने के अवसर बच्चों को आखिर मिलते ही कितने हैं?

मॉण्टेसरी वातावरण में पले बच्चे एकाग्रता व दत्तचित्तता का एक खास स्तर प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं। मॉण्टेसरी स्कूल में किए जाने वाले सबसे पहले क्रियाकलाप जिनमें बच्चे ध्यान लगाकर काम करना सीखते हैं वे हैं – धागे में मनके डालकर माला बनाना और फिर आगे चलकर अनाज को एक डिब्बे से दूसरे डिब्बे में स्थानान्तरित करना। शुरुआती जीवन में बन गई यह आदत आगे चलकर

तब बड़े सहज रूप से बच्चे में विकसित होती है, जब व्यावहारिक जीवन की इन गतिविधियों में वह स्वेच्छा से भाग लेता है।

और अन्त में, अध्यापक होने के नाते यदि हमारा सपना सार्थक शैक्षिक वातावरण बनाना है तो हमें इस पर तुरन्त ही काम शुरू कर देना चाहिए, क्योंकि अब तो हमने साथ चलने की ठान ही ली है। बचपन की प्रारम्भिक अवस्था को जब हम इस नजरिए से देखते हैं तो हमें यह साफ दिखाई देने लगता है कि हमें ऐसे कार्याभ्यास विकसित करने होंगे जो स्वाभाविक रूप से बच्चों के समग्र विकास पर केन्द्रित रहते हैं और जिनमें बच्चों के सहज विकास हेतु पर्याप्त समय व स्थान होते हैं।

l Un HkZ

1. http://montessori-science.org/
2. http://montessori-science.org/montessori_science_journal.html
3. http://montessori-science.org/montessori_science_journal.html

सुश्री उमा *शंकर सेण्टर फॉर मॉण्टेसरी ट्रेनिंग, चेन्नै की निदेशक और इण्डियन मॉण्टेसरी सेण्टर की महासचिव हैं। मॉण्टेसरी शिक्षण पद्धति में उन्हें 25 वर्षों से भी अधिक समय का अनुभव है और इसके प्रामाणिक रूप से बाल–केन्द्रित पद्धति होने के चलते वे इसकी कारगरता में विश्वास करती हैं। 1998 से वे 3–6 साल के बच्चों के साथ काम करने हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षण देती रही हैं। उनसे umashanker46@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद*** *: मनोहर नोतानी*